कुदरत, कुदरत की रचना, कुदरत का कानून

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कुदरत ही ईश्वर है। कुदरत की रचना ही विश्व है। उसके द्वारा बनाया गया शाश्वत् नियम ही कानून है। इस सृष्टि में जीने वाले हम कौन हैं? यह जगत क्या है? सृष्टि दो तरह के तत्वों से बनी है जिसमें रंग, वर्ण, स्पर्श, गलन मिलन की क्रिया होती है वह जड़ या पुद्गल है। सृष्टि जड़ और चेतन का संयोग है। परमाणु इतने सूक्ष्म होते हैं कि वो दिखाई नहीं देते। परमाणुओं का संघात विश्व की रचना करता है। परमाणुओं के संयोग से ही विश्व का संघात होता है। वस्तु साधन है, साध्य नहीं। जीवन में उपयोग के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। आत्मा के स्तर पर जब प्राणी जीवनयापन करता है तो उसे वस्तुओं की आवश्यकता नहीं रहती। आत्मा चेतन है। चौरासी लाख जीव योनियों में पृथक–पृथक आत्माएं हैं, चार गतियों में सम्पूर्ण जीव समाहित हो जाते हैं।

बाह्य जगत् में हम अपना दैनिक कार्य संचालित करते है। आंखों से दिखाई पड़ने वाला बाह्य जगत् है। भीतरी जगत् में भाव पैदा होते हैं। स्वार्थ की चेतना स्व तक सीमित है। परार्थ की चेतना दूसरों तक कार्य करती है। परमार्थ की चेतना इस जगत् से परे पारलौकिक जगत् तक जाती है। हमारे स्थूल शरीर का नियामक भाव होता है। मन क्या है? मनन या चिंतन करना मन का कार्य है। मन को चित्त भी कहा जाता है। मानव के शरीर में पांच इंद्रियां होती है। पांचों इंद्रियां अपने–अपने विषयों को ग्रहण करती है। मन जिस इन्द्रिय के साथ जुड़ता है उसी विषय का ज्ञान प्राप्त होता है।

मन का प्रमुख आधार है चेतना इसी आधार पर मन तीन स्तर पर कार्य करता है– चेतन अवचेतन और अचेतन। चेतन मन, मन का वह स्तर है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्रियाओं का वर्तमान समय में ज्ञान रहता है। चेतन मन में विचार या भावधारा का प्रवाह निरंतर बहता रहता है। मन के इस स्तर को अवधान का केन्द्र या चेतन का केन्द्र कहते हैं। चेतना मन की क्रियाओं का संचालन तथा नियंत्रण वास्तविकता के अनुसार करता है। ये क्रियाएं वातावरण के द्वारा प्रवाहित होती हैं। चेतन मन के तीन पक्ष है– ज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक मन

की ये तीनों मानसिक क्रियाएं मिलकर कार्य करती हैं। कभी किसी मानसिक प्रक्रिया की प्रधानता रहती है तो कभी किसी की।

अवचेतन या अर्धचेतन मन चेतना का वह स्तर है जिसकी क्रियाएं ध्यान की सीमा से परे होते हुए भी प्रयत्न करने पर ध्यान केन्द्र में लायी जा सकती हैं। अवचेतन मन की क्रियाएं न तो पूर्ण रूप से व्यक्त होती है न अव्यक्त। प्रयत्न करने पर वे व्यक्त या अव्यक्त दोनों हो सकते हैं। अवचेतन मन की क्रियाएं बिना किसी प्रतिबंध के चेतन मन में आ जाती हैं। अचेतन मन चेतना का वह भाग है जिसके बारे में व्यक्ति प्रयास करे तो भी उसे ज्ञात नहीं होता। इसे चेतना की गहराई का भी नाम दिया जाता है। व्यक्ति अपने जीवनकाल में भिन्न–भिन्न इच्छाओं का दमन करता है। वे इच्छाएं चेतन मन से निकलकर अचेतन मन मे प्रवेश कर वहीं सुरक्षित रहती हैं।

दमित इच्छाओं से चेतन मन का विकास भी होता है। हमारा अचेतन मन दमित आवेगों, भूले हुए अनुभवों, इच्छाओं, आवश्यकताओं, संवेगों एवं लालसाओं का भंडार है, जो कि अभिव्यक्त होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं कर पाता। अर्द्धचेतन मन की क्रियाएं न तो पूर्ण रूप से व्यक्त होती हैं और न अव्यक्त, इन पर कोई प्रतिबन्ध काम नहीं करता। सभी क्रियाएं चेतन मन के समान ही होती हैं। इनको व्यक्ति ज्ञात कर सकता है। अचेतन मन की क्रियाएं पूर्णतया अव्यक्त होती हैं।

लेश्याध्यान भाव शुद्धि का प्रयोग है। भाव ही व्यक्ति के व्यवहार का आदि स्रोत है। अतः भाव–शुद्ध होने पर व्यवहार भी शुद्ध होता है। लेश्याध्यान के प्रयोग में संबंधित रंग को चमकता हुआ आभामंडल में काल्पनिक रूप से देखते हैं। तत्पश्चात् इसे श्वास के साथ शरीर के भीतर लेते हैं। जिस केन्द्र से रंग का सम्बन्ध होता है, उस केन्द्र से अमुख रंग के प्रकाश को आभामंडल में फैलाता हुआ देखते हैं। इसके बाद भावना की जाती है। लेश्याध्यान में प्रमुख पांच केन्द्र तथा उनके पांच रंग निर्दिष्ट किये गये हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से लेश्याध्यान का प्रयोग भाव–शुद्धि का प्रयोग है। शरीर में नौ चैतन्य केन्द्र है। इन केन्द्रों पर गहरे रंग का ध्यान करने से शरीर में परिवर्तन आता है। नकारात्मक विचार शांत होते है और रचनात्मक ऊर्जा आती हैं।

लेश्याध्यान में मुख्य तीन रंगों का चयन किया जाता है– चमकता श्वेत, लाल और पीला। ये तीनों रंग शुभप्रशस्त एवं मनोज्ञ है। लाल रंग का ध्यान करने से शक्ति केन्द्र और दर्शन केन्द्र जागृत होते है। पीले रंग का ध्यान करने से आनंद केन्द्र जागृत होता है। श्वेत रंग से विशुद्ध केन्द्र, तैजस केन्द्र और ज्ञान केन्द्र जागृत होते है। दर्शन केन्द्र पर बाल सूर्य जैसे लाल रंग में ध्यान करने से ग्रंथियों पर नियंत्रण होता है। यही रंग हमारे भीतर जीवन की आध्यात्मिक शक्ति योग्यता पराक्रम और शारीरिक क्षमता को पुष्ट करता है। इस प्रकार रंग शरीर को अनेक प्रकार से प्रभावित करता है। विशुद्धि केन्द्र पर नीले रंग, दर्शन केन्द्र पर अरुण रंग, ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग और ज्योतिकेन्द्र पर श्वेत रंग का ध्यान किया जाता है।